पाठ 28

आशा

मलाकी 4:1-6

> मलाकी पुराने नियम का आखिरी भविष्यवक्ता था। उसने नहेमायाह के समय में परमेश्वर का वचन सुनाया था जब एक छोटे से समुदाय ने यरूशलेम का पुनर्निर्माण किया था। अब्राहम के समय के सोलह सौ साल बाद भी, हमारी मानवीय समस्या अपरिवर्तित थी, और परमेश्वर के लोग अभी भी उनके वचन के पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मलाकी के बाद, चार सौ वर्षों तक बाइबल की कहानी में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हुआ।

जैसे ही हम पुराने नियम के अंत में पहुँचते हैं, यह पूछना उचित लगता है कि: इतने वर्षों के बाद परमेश्वर और उनके लोगों के बीच का संबंध किस स्थिति में है? मलाकी हमें कोई प्रोत्साहक उत्तर नहीं देता।

परमेश्वर से विमुख

मलाकी की पूरी पुस्तक में परमेश्वर के प्रति प्रतिरोध की एक प्रवृत्ति चलती है।

परमेश्वर अपने प्रेम की पुष्टि करते हुए आरंभ करते हैं: "प्रभु कहता है, 'मैं ने तुम से प्रेम किया है" (मलाकी 1:2)। परन्तु परमेश्वर के लोग अवज्ञा में अपने हाथ बाँध लेते हैं: "तू ने किस बात में हम से प्रेम किया है?" (1:2)।

फिर परमेश्वर उन पुरोहितों को सम्बोधित करते हैं जो उनके नाम का तिरस्कार करते हैं, परन्तु वे कहते हैं, "हम ने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?" (1:6)।

फिर परमेश्वर दशमांश का मुद्दा उठाते हैं। "क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? पर देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो" (3:8)। परन्तु परमेश्वर के लोग पीछे हटते हैं: "हम ने किस बात में तुझे लूटा है?" (3:8)।

फिर परमेश्वर अपने लोगों पर उनके बारे में कठोरता से बोलने का आरोप लगते हैं। "तुम ने मेरे विरुद्ध ढिठाई की बातें कहीं हैं" (3:13)। परन्तु वे दिखावटी मासूमियत के साथ पूछते हैं, "हम ने तेरे विरुद्ध क्या कहा है?" (3:13)।

यह चर्चा कहीं नहीं जा रही है, और यह प्रवृत्ति पूरी किताब में चलती रहती है - इनकार, इनकार, इनकार। जब परमेश्वर पश्चाताप के मुद्दे को उठाते हैं - "'तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूँगा,' सेनाओं के यहोवा का यही वचन है" (3:7) - इस बात की प्रतिक्रिया में अवज्ञा का एक स्वर है: "हम किस बात में फिरें?" (3:7)।

रिश्ते तब पुनर्स्थापित होते हैं जब दोष पैदा करने वाले मुद्दों को सामने लाया जाता है और ईमानदारी से निपटा जाता है। परन्तु जब परमेश्वर अपने लोगों के साथ मेल-मिलाप करने के लिए पहुँचे, तो वे समस्या से इनकार कर रहे थे।

मानव संघर्ष

परमेश्वर से अलग होने के अलावा, पुराना नियम लोगों के आपसी संघर्ष के साथ समाप्त होता है। बगीचे में, आदम और हव्वा ने एक खूबसूरत रिश्ते का आनंद लिया जिसमें एक-दूसरे के लिए उनका प्यार उनके लिए परमेश्वर के प्यार का दर्पण था।

वे एक साथ सहज थे, और उनका एक-दूसरे पर पूरा भरोसा था। परन्तु बुराई के ज्ञान ने सब कुछ बदल दिया। जो कुछ भी गलत हुआ उसके लिए आदम ने अपनी पत्नी को दोषी ठहराया और पहली बार, पुरुष और महिला के बीच संदेह विकसित हुआ। बुराई के ज्ञान ने पहली शादी में अलगाव पैदा कर दिया।

कोई भी व्यक्ति अपनी शादी के दिन यह कल्पना नहीं करता कि उनकी शादी तलाक तक पहुँच जाएगी। परन्तु हमारे समय की तरह , मलाकी के समय में भी शादियाँ टूट रही थीं: "यहोवा तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच साक्षी हुआ था जिससे तू ने विश्वासघात किया है" (2:14))।

पुराने नियम की कहानी एक पुरुष और एक महिला के साथ शुरू होती है जो बगीचे में एक आदर्श जीवन का आनंद साझा कर रहे थे, और यह उन पुरुषों और महिलाओं के साथ समाप्त होती है जो वफादारी और प्रेम के रिश्ते को बनाए रखने में असमर्थ थे।

एक शादी में विश्वास के टूटने के कारण जो अलगाव शुरू होता है वह संघर्ष की दुनिया को जन्म देता है जिसमें परिवार, समुदाय और राष्ट्र टूट जाते हैं।

एक अभिशाप के तहत

मानो परमेश्वर से अलगाव और एक-दूसरे से अलगाव काफी नहीं था, दुनिया में पैदा हुए हर व्यक्ति पर एक भयानक अभिशाप मंडरा रहा है।

बुराई पर परमेश्वर का श्राप मलाकी की पुस्तक में व्याप्त है: "मैं तुम को शाप दूँगा, और जो वस्तुएँ मेरी आशीष से तुम्हें मिली हैं, उन पर मेरा शाप पड़ेगा" (2:2)। "तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन् सारी जाति ऐसा करती है" (3:9)।

पुराने नियम की अंतिम पंक्ति एक श्राप के साथ समाप्त होती है: "वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ [एक श्राप]" (4:6)।

इसलिए पुराने नियम के अंत में, परमेश्वर से अलगाव की हमारी समस्या, एक-दूसरे के साथ हमारे संघर्ष, या हम सभी पर मंडरा रहे भयानक अभिशाप से निपटने में कोई प्रगति नहीं हुई थी।

अधूरा वादा

पाप की समस्या पुराने नियम में व्याप्त है, परन्तु बाइबल की कहानी का हृदय एक वादे पर धड़कता है। जब पाप संसार में आया, तो परमेश्वर ने वादा किया कि एक स्त्री से उत्पन्न कोई व्यक्ति उस दुष्ट को और उसके सभी कार्यों को नष्ट कर देगा (उत्पत्ति 3:15)।

परमेश्वर ने अपने लोगों को न केवल समस्या के बारे में बल्कि वादे की भी याद दिलाने के लिए मलाकी को भेजा: "धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों के समान कूदोगे और फाँदोगे" (मलाकी 4:2)।

वह दिन आएगा जब परमेश्वर के लोगों के सभी घाव ठीक हो जाएंगे, और वे उस स्वतंत्रता का अनुभव करेंगे जिसका आनंद बछड़े रिहा होने पर लेते हैं। परन्तु पुराने नियम के अंत में, हम अभी भी इस वादे के पूरा होने की उम्मीद कर रहे हैं।

मध्यांतर का समय

यदि बाइबल को एक नाटक के रूप में प्रस्तुत किया जाता, तो यह दो भागों में प्रकट होती, जैसे कि दो-अभिनय नाटक। पुराना नियम अधिनियम 1 है, और जैसे ही यह समाप्त होता है हम मध्यांतर से पहले वापस आने के लिए तैयार होते हैं यह देखने के लिए कि अधिनियम 2 में क्या होता है।

जैसे ही हम पहले भाग पर विचार करने के लिए थिएटर के गलियारे से बाहर निकलते हैं, लोग उस बारे में बात कर रहे होते हैं जो उन्होंने देखा।

"इस भाग में कुछ हिस्सा थोड़ा भारी था," एक बड़ा आदमी अपनी पान खाते हुए कहता है।

हाथ में चाय का गिलास लिए एक महिला कहती है, "इसमें से कुछ चीज़ों ने मुझे रोने पर मजबूर कर दिया।"

"मुझे आशा है कि दूसरे भाग का अंत इसके मुकाबले अधिक सुखद होगा," तीसरा व्यक्ति कहता है।

"खैर, यह अवश्य होना चाहिए," कोई और कहता है। "पहले भाग की शुरुआत से अंत तक वादे और संकेत मिलते रहे हैं; कुछ अच्छा होने वाला है।"

"खैर, जो भी हो, यह अभी तक हुआ तो नहीं है," एक व्यक्ति कहता है जो स्पष्ट रूप से निराश है। "पूरे अधिनियम 1 में मूल समस्या से निपटने के लिए कुछ नहीं हुआ।"

"कुछ भी नहीं हुआ से तुम्हारा मतलब क्या है?" उसकी पत्नी हस्तक्षेप करती है। "हमारे पास व्यवस्था और बलिदान थे । हमारे पास राजा और पुरोहित थे। हमने मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति का बादल देखा है।

"तो क्या हुआ?" वह निराश व्यक्ति गुस्से में कहता है। "मुख्य समस्या हल तो नहीं हुई ना। वे अभी भी अलग-थलग हैं। वे अभी भी संघर्ष में हैं। और वे अभी भी श्राप के अधीन हैं।"

मध्यांतर की समाप्ति पर घंटी बजती है, और वे सभी दूसरे भाग के लिए थिएटर में अपनी सीटों पर वापस आ जाते हैं।

अधिनियम 2 देखना ना भूलें!

जब आप व्यवस्थाओं, पुरोहितों और बलिदानों के साथ पुराने नियम के अंत में आते हैं, तो आप इस सवाल के साथ रह जाते हैं, "कौन परमेश्वर से हमारे अलगाव को समाप्त कर सकता है, हमारे दिलों को बदल सकता है और इस भयानक अभिशाप को हटा सकता है?"

नया नियम इस प्रश्न का उत्तर देता है।

यीशु मसीह हमें परमेश्वर से वापस मिलाने के लिए संसार में आए: "मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए" (1 पतरस 3:18)।

यीशु हमें एक-दूसरे के साथ मेल कराने के लिए आए: "क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया" (इफिसियों 2:14)।

मसीह "हमारे लिये शापित बना" और हमें श्राप से मुक्त करने आए (गलातियों 3:13)।

परन्तु यदि हमारी आशा केवल यीशु में पाई जाती है, तो पुराने नियम का क्या महत्त्व है?

ठीक से समझने पर, पुराना नियम हमें यीशु को उस उद्धारकर्ता के रूप में पहचानने और विश्वास के साथ उनका स्वागत करने के लिए तैयार करता है जिसकी हमें आवश्यकता है।

पुराने नियम के माध्यम से, परमेश्वर हमें बताते हैं (1) वें कौन है और हम कौन हैं, (2) हमारी सबसे गहरी समस्या क्या है, (3) यीशु कौन है, (4) वें क्या हासिल करेंगे और (5) उन सभी को वें क्या प्रदान करते हैं जो उन में विश्वास करते हैं।

तो आइए समीक्षा करें कि पुराने नियम की अपनी यात्रा से हमने क्या सीखा है।

परमेश्वर हर चीज़ के निर्माता और स्वामी हैं। आपका *जीवन* उनके हाथों का एक उपहार है (सत्र 1), और आपको सदैव उनका आनंद लेने और उनकी *आराधना* करने के लिए बनाया गया है (सत्र 16)। जिस परमेश्वर ने आपको बनाया है वह *पवित्र* है (सत्र 20), और आपकी सबसे गहरी समस्या यह है कि आप एक ऐसी दुनिया में पैदा हुए हैं जो एक *श्राप* के अधीन है (सत्र 2), जिसमे आप बुराई के ज्ञान से ग्रस्त है और परमेश्वर की उपस्थिति से बहिष्कृत।

परमेश्वर से अधिक खुद से प्रेम करने और दूसरों से अधिक खुद की देखभाल करने की प्रवृत्ति आपके भीतर गहरी है और यह आपको परमेश्वर के नियम को तोड़ने और उनके विरुद्ध पाप करने का कारण बनती है (सत्र 7; 17)। आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, और यीशु ही वह उद्धारकर्ता है जिसकी आपको आवश्यकता है।

यीशु परमेश्वर की *महिमा* है जो इस विदेशी दुनिया में आए (सत्र 25; 27)। यीशु वह सच्चा *मंदिर* है जिसमें परमेश्वर की उपस्थिति हमारे बीच आई है (सत्र 15)। यीशु वह *सेवक* हैं जो परमेश्वर की इच्छा पूरी कराते हैं (सत्र 21)। यीशु वह पुरुष है जिसने आंसुओं की इस दुनिया में कष्ट सहा (सत्र 24)। यीशु वह भला *चरवाहा* है जिसने अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण त्याग दिए (सत्र 26)। वह हमारा *भविष्यवक्ता*, हमारा *पुरोहित* और हमारा *राजा* है (सत्र 14; 9; 12)।

अपने जीवन में, उन्होंने उस *धार्मिकता* को पूरा किया जिसकी अपेक्षा परमेश्वर हमसे करते हैं (सत्र 18)। उस सिद्ध जीवन को त्याग कर, उन्होंने उस *प्रलय* को सहन किया जो हम पर गिरने वाली थी (सत्र 4), अपने रक्त को बहाकर *प्रायश्चित* करते हुए (सत्र 8; 6)। वें अब्राहम को दिए गए *वचन* पूरा करते हैं (सत्र 5), और वें दाऊद के *सिंहासन* पर सर्वदा राज्य करेंगे (सत्र 13)।

यीशु आपके पापों को क्षमा करने और आपको परमेश्वर से वापस मिलाने के लिए तैयार हैं। वें वह *उद्धारकर्ता* हैं जो आपको मुक्ति दिला सकते हैं (सत्र 11)। वें आपका *मन* बदलने में सक्षम हैं (सत्र 23), और वें आपको नया *साहस*, *आशा* और *आनंद* प्रदान कर सकते हैं (सत्र 10, 28, 19)। प्रेम में, वें पुकार रहे हैं (सत्र 22), यह *मुक्ति* आपको मुफ्त में प्रदान कर रहे हैं (सत्र 3)।

पुराना नियम, ठीक से समझा जाए तो, आपको यीशु में विश्वास की ओर ले जाएगा। क्या आप उनका स्वागत करने के लिए तैयार हैं?

> **यह विचार करना आसान होगा कि सभी धर्म परमेश्वर की ओर ले जाते हैं, परन्तु पुराना नियम इसके विपरीत सिखाता है। कोई भी धर्म हमें परमेश्वर तक नहीं पहुँचा सकता, यहाँ तक कि पुराने नियम का धर्म भी नहीं। संपूर्ण पुराना नियम हमें यीशु की आवश्यकता क्यों है यह दिखाने के लिए दिया गया था और यह हमे उनके आगमन के लिए तैयार करने के लिए दिया गया था। परमेश्वर सभी झूठी आशाओं को नष्ट कर**

देते हैं ताकि हम उनके पुत्र में अपनी सच्ची आशा पा सकें, जो पाप की समस्या से निपटने और परमेश्वर के वचन को पूरा करने के लिए आए थे।

प्रश्न

परमेश्वर के वचन के साथ और जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिंब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. **यदि आप अधिनियम 1 के अंत में थिएटर के गलियारे में होते, तो आप क्या कहते?**

2. **पुराना नियम परमेश्वर से दूर लोगों के साथ समाप्त होता है। क्या कोई ऐसा समय आया है जब आपको परमेश्वर से दूर होने का एहसास हुआ हो?**

3. **आपने कब दूसरों के साथ संघर्ष का अनुभव किया है? आपके अनुसार मानवीय संघर्ष इतने प्रचलित क्यों हैं?**

4. **पुराने नियम में धर्म की कुछ सीमाएँ क्या थीं**?

5. **क्या आप मानते हैं कि यीशु आपको परमेश्वर से वापस मिलाने और आपको शांति दिलाने में सक्षम हैं? क्यों या क्यों नहीं?**